पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510

आश्वस्त

वर्ष 19, अंक 156

सितम्बर 2016

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Com

संपादक – कलावती परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की मासिक पत्रिका

KANARA WELFARE TRUST
KANARA COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR

एक पहली है जीवन

✍ राजेन्द्र ग्रोवर

एक पहली गढ़ दी तूने
तो बात कहां पूर्ण होगी,
जब राज की बात जड़ दी तूने,
तो रात कहां पूर्ण होगी।

जब चांद भी आंख दिखाने लगा,
मेरा दिल भी भरमाने लगा,
ढूँढू मैं कैसे उन को,
तारों की बारात कहां पूर्ण होगी।
एक पहली.....

बिखरे मोती सम्भाले कैसे,
मनकों के लिए धागा चाहिए,
जब भटक गया राहों में,
फिर किस की सौगात पूर्ण होगी।
एक पहली.....

जीवन एक पहली है,
सम्भाल ले कुछ पलों को,
इधर परिवर्तित हो रही हर चीज
रूक जाने की फरियाद,
कहां पूर्ण होगी।

एक पहली गढ़ दी तूने,
तो बात कहां पूर्ण होगी।

770-71, हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी,
अम्बाला छावनी-133001 हरियाणा

घाव

✍ श्रीमती संध्या दत्ता कदम

शरीर का घाव दिखता है, दिल का घाव छिपता है।
दोनों का दर्द सहता नहीं, यह कैसे भीषण पीड़ा है।
अपनों की बोली का घाव, तिरस्कृत जन-मन के घाव,
नजरों की कटार चलाया हुआ, अपमान का जहर पिलाया हुआ।
अपने-पराये सभी समय में, दर्द भरे जख्म झेले है,
भाई-भाभी ने ताना मारा, क्या औकात थी इसे हमने सवारा।
ऐसे वार किये, तीर से भी तीक्ष्ण, मरकर भी मैं जिंदा रही उस क्षण,
पति परमेश्वर मारूती मेरे बच्चों सा की सेवा मेरी।
ये न रहते, मैं कहाँ रहती ? मुर्दे के समान ढेर बन जाती,
क्रोधी है मानती उतने नहीं, कसाई बन जानवर काटता कहीं।
घाव अब मेरे बदलने लगे है, वैरत्व के भाव अब मिटने लगे है।
जीवन निरभ्र बना सुखी न भ्रांति,
सभी को माफ किया बदली ये नीति,
चलेंगे, अलविदा, हमें दीजिए अनुमति।

केनरा वेलफेयर ट्रस्ट, दिवेकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स
कोडीबाग, कारवार-581352
जिला उत्तर कन्नड़, राज्य कर्नाटक
मोबा. 09448796762

✍ शकूर अनवर की तीन ग़ज़लें –

(1)

तआल्लुक़ तुझ से यह कैसा पड़ा है
मुझे हर शख़्स की सुनना पड़ा है

लड़ूँगा फिर मुक़द्दर से मैं अपने
सितारों से नया झगड़ा पड़ा है

यह दुनिया इस कदर वीरॉ नहीं है
तेरी ऑखों पे ही पर्दा पड़ा है

चमकते हैं तेरी यादों के जुगनू
खण्डर दिल का कहाँ सूना पड़ा है

मकाने दिल-मेला ख़ाली न समझो
मगर इसमें अभी ताला पड़ा है